बांस पर फूल एक वैज्ञानिक चुनौती

अनिल सिंह सोलंकी

शोधकर्ताओं और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में रहने वाले लोगों ने बांस फलन और उससे उत्पन्न भयानक रोगों को बार-बार होते देखा है। इस अनोखी प्राकृतिक घटना को लेकर आज भी शोधकर्ताओं में आम सहमति नहीं बन पाई है।

बांस हर 25-60 वर्षों में फूलते हैं और इतने फूलते हैं कि उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में खुशहाली बर्बादी में बदल जाती है। कुछ शोधकर्ताओं का मत है कि पुष्पन के दौरान बांस की जैविक घड़ी में परिवर्तन की वजह से ऐसा होता है।

बांस की 1450 प्रजातियां भारत समेत पूर्वी एशिया, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में पाई जाती हैं। भारत में उत्तर-पूर्व के हिमालय वाले क्षेत्र में बांस के विशाल जंगल हैं जो यहां के लोगों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन से जुड़े रहे हैं। यहां इसे घर बनाने, भोजन और विवाह में उपयोग में लाया जाता रहा है।

दिलचस्प बात है कि बांस 24 घंटे में 100 से.मी. तक बढ़ता है और केवल 25-60 साल में एक बार फलता-फूलता है। बांस फलन अपने साथ पहले खुशहाली और बाद में नुकसान लाता रहा है जो मिज़ोरम में मौतम के नाम से जाना जाता है और कई वर्षों से वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती बना हुआ है।

मिज़ोरम में मौतम से ठीक एक वर्ष पहले बांस की एक प्रजाति *बम्बूसा तुलदा* को सिनामोन कीट या मौतक मुसली तेज़ी से खाना शुरू कर देते हैं। ये कीट बांस को इस कदर खाते हैं कि खा-खाकर मर जाते हैं। मिज़ोरम में पाए जाने वाले जीवों और वनस्पतियों की मौत इन्हीं बग के खाने से शुरू हो जाती है, जिसकी वजह से यहां भारी आर्थिक नुकसान होता है।

मिज़ोरम में मौतम 1861, 1911 और 1912 में हो चुका है। 2005 के मौतम ने मिज़ोरम के आइज़ॉल समेत मामित ज़िले के साबुअल, रेंगेटेलानगंग, छिमलूंग, कलापहार में भारी नुकसान किया था। इसके साथ-साथ टिड्डे, विशाल अफ्रीकी घोंघे और पत्ता रोलिंग कैटरपिलर की संख्या में भी वृद्धि देखी गई थी। 2005 में, मौतम के दौरान शोधकर्ताओं ने चूहों की संख्या में तेज़ी से वृद्धि देखी थी। इन चूहों ने खड़ी फसलों को खाकर बर्बाद कर वहां के लोगों में कई प्रकार की बीमारियां फैला दी थीं।

मौतम के दौरान मनुष्य और जीव-जंतु भुखमरी के कारण दूषित भोजन खाने को मजबूर हो जाते हैं। बाद में, लोगों ने डरकर जीवन बचाने के लिए मिज़ोरम से पलायन शुरू कर दिया। ऐसी कठोर परिस्थितियों में तथा कोई अन्य व्यवस्था न होने की वजह से सरकार भी मदद भिजवाने में प्रायः कम सफल हो पाती है।

मौतम के दौरान भोजन की उपलब्धता में कमी होना आम बात है। कीट-मांस विषम परिस्थितियों में काम आने वाला एक ऐसा सुगम भोजन है, जो मनुष्य को जीवन बचाने के लिए प्राकृतिक रूप से उपलब्ध होता है। मौतम के समय कीट-मांस ने उत्तर-पूर्वी राज्यों में लोगों की जान बचाने में काफी मदद की है। इस कीड़ों से बने भोजन, जिसको मिज़ो भाषा में थंगंग कहते हैं, को लोग स्वादिष्ट भोजन के रूप में चटनी बनाकर खाते हैं। मौतम के समय एक दिन में आसानी से 20-30 किलोग्राम तक थंगंग एकत्र किया जा सकता है। दुनिया में केवल म्यांमार, मिज़ोरम, मणिपुर, त्रिपुरा और असम राज्यों में ही कीट-मांस प्रचलन में है। ***(स्रोत फीचर्स)***